मां ने समझाया

पूनम पांडे

मोनू ने आज स्कूल से घर आकर सीधा मां को ही पुकारा।'मां मां, मैं आ गया, आप कहां हो?' सुन रही हो ना मेरी बात।मां ओ मां।' वह पुकारता चला गया।
'आ रही हूं ।' कहकर मां चट उसके सामने आ गई थी। 'लो मैं आ गई। तो आज कैसा रहा स्कूल?' मां ने उससे पूछा।'अच्छा रहा मां ।'मोनू खुशी से बोला।
मोनू पिछले सप्ताह ही दूसरी कक्षा में आया था।वह नयी नयी चीजें सीखने में बहुत रूचि लेता था। वह मां की कलाई पकड़कर पूछने लगा,' अच्छा, मां आप बताओ कि अनुशासन क्या है हम अनुशासित कैसे बन सकते हैं।आपकी नजर में ऐसा कौन है जो अनुशासन में रहता है?'
मां उसकी बात सुनते ही समझ गई कि आज उसकी अध्यापिका ने अनुशासित बनने की बात कही है।
'अरे ,यह तो बहुत साधारण और सरल काम होता है मोनू।बाहर आओ।और इधर देखो।'
मोनू चट मां के पीछे पीछे बाहर आ गया।
'देखो धरती माता की संतान ये आम का पेड़। कितना आज्ञाकारी और अनुशासित है।'
'आम का पेड़ इतना खामोश, और यह अनुशासित है?मगर वह कैसे मां। मैं कुछ समझा नहीं?'
'देखो, यह केवल मई- जून में ही फल देता है।कभी तुमने देखा कि यह जनवरी में आम दे रहा हो ?'
'अरे,,मां आप यह कैसी बात कह रही हो जनवरी से तो इसमें बौर आता है।आप भी ना।'मोनू ने मां को याद दिलाया ।
हां हां मोने मेरे कहने का असली मतलब यह था कि यह आम का पेड़ है अनुशासित। इसको कुदरत के नियम कायदे से चलना पसंद है।और यही सही भी है।'
मोनू को मां की बात में मजा आ रहा था ।
'वह देखो आसमान।गौर से देखो मोनू, यहां इस समय भी बादल हैं।मगर काले भूरे बादल जुलाई अगस्त में ही हर रोज बरसते हैं।'
'ओह, मां,तो वह बादल भी अनुशासित हैं।'मोनू ने अपनी बात रखी।
'बिल्कुल, इन बादलों को मालूम है कि धान के पौधे रोपे जा रहे हैं।धान के खेत को पानी चाहिए। गर्मी से जमीन सूख गयी है।तालाब, झील, पोखर सूख गये हैं।इनको भरपूर पानी चाहिए। इसलिए यह जुलाई और अगस्त में जमकर बरसते हैं।तभी तो पिकनिक का मजा आता है।है कि नहीं?' मां ने बोलते- बोलते मोनू की तरफ देखा।
बहुत मजा आता है।तो मां रोज सुबह समय पर उगने वाला सूरज और
रात को टिमटिम करते चांद और तारे भी अनुशासित हैं।शाबाश।
तो अब बताओ कि अनुशासित का मतलब हुआ क्या।
मां ने मोनू से ही पूछ लिया।
मां इसका मतलब मैं खूब समझ गया। अपना काम समय पर करना और सही तरीके से करना।शाबाश बेटे ।तुम तो जल्दी समझ गये।मां ने मोनू की पीठ थपथपाई और उसकी प्रशंसा की।